Bodhi-Path Year 2022 July Issue Volume 23 Page No 63-68

2600 सौ वर्ष पूर्व बुद्ध ने पर्यावरण संरक्षण का मर्म समझा

डॉ संघमित्रा बौद्ध
(संपादिका) बोधि–पथ

वर्तमान युग में मनुष्य को प्राकृतिक रूप से भयावह आपदा से सामना करने को विवश होना पड़ा है, जो पृथ्वी पर सभी जीवों के अस्तित्व को खतरे में डालती है। वैज्ञानिक जिसे 'पारिस्थितिकी संकट' का नाम देते हैं। इन सभी पहलूओं पर बुद्ध ने आज से 2600 सौ वर्ष पूर्व मार्ग प्रशस्त का दिया था, नियम बना दिये थे। इन नियमों का न केवल उन्होंने स्वयं अनुपालन किया बल्कि भिक्षु संघ, नागरिकों और श्रेष्ठ जनों को भी इन्हें अपनाने के लिए प्रेरित किया।

भगवान् बुद्ध ने यह बताया कि ''वृक्षों में भी जीवन है'' **(जीव संञिनो)।**[1] जो पेड़–पौधो को काटते हैं, वे मूर्ख लोग हैं (मोघपुरिसा तालवरूणे छेदापेत्वा **ताणेयंत)।**[2] तथा उन्होंने नए ताड़–वृक्षों को काटकर उसके पत्तों से पादूकाएं **(ताड़पत्त पादुका)** बनाने पर भी रोका और उसे दूषित कृत्य **(दुक्कट)** बतलाया, क्योंकि वृक्ष को काटने से जीव हिंसा होती है **(जीवंविहेठ्ठेन्ति)।**[3]

पर्यावरण के अंतर्गत केवल पेड़–पौधे ही नहीं, बल्कि वायु, जल, वनस्पति आदि जंगम और स्थावर, पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े सभी कुछ सम्मिलित हैं। इन सबकी रक्षा करके ही पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में भगवान् बुद्ध ने इस क्रम पर प्रकाश डालते हुए निम्नलिखित उद्‌गार व्यक्त किया है कि– ''संसार के समस्त प्राणी जंगम या स्थावर, दीर्घ या महान् मध्यम या ह्रस्व, अणु या स्थूल, दृश्य या अदृश्य, दूरस्थ या निकटस्थ, उत्पन्न या अनुत्पन्न सभी प्राणी सुखपूर्वक विहार करें। कोई भी किसी की वंचना या अपमान न करे। वैमनस्य या विरोध से एक दूसरे की दुःख की इच्छा न करे। जिस प्रकार माता अपने जीवन की

तनिक भी चिन्ता न करके अपने प्रिय एवं एकलौते पुत्र की रक्षा करती है; उसी प्रकार मनुष्य समस्त प्राणीयों के प्रति असीम कल्याण की भावना रखे।'' **(मेत्तसुत्त)**[4]

भगवान् बुद्ध के जन्म से परिनिर्वाण काल तक उनकी गतिविधियों को देखते हुए भगवान् बुद्ध को पर्यावरण की रक्षा का प्रथम पथ प्रदर्शक तथा उपदेशक कहा जाय, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भगवान् बुद्ध के समान प्रकृति–प्रेमी, पर्यावरण–रक्षक विरले ही हुए हैं। भगवान् बुद्ध का जन्म, बोधि–प्राप्ति, प्रथम उपदेश देने तथा महापरिनिर्वाण की घटना अक्षरशः यह सिद्ध करते हैं कि वे पर्यावरण रक्षण के महान् समर्थक, उद्धारक व प्रणेता थे। भगवान् बुद्ध किसी भी परिस्थिति में जंगलों को उजाड़ने की बात नहीं करते थे, बल्कि समय–समय पर वे राजाओं व सामान्य लोगों को नये वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करते रहते थे। उनकी ही प्रेरणा से अनेकों अम्बवन अस्तित्त्व में आये थे। वे हमेशा भिक्खुओं को कहते थे ***''भिक्खु ध्यान करो, अरण्य में जाकर एकांत में वृक्षों के नीचे पालथी मारकर शरीर को सीधा कर बैठ जाओ और आते–जाते श्वास पर मन केन्द्रित करके विपश्यना पथ पर बढते चले जाओ।''*** भगवान् बुद्ध की जीवन लीला यह सिद्ध करती है कि पर्यावरण की रक्षा के बिना मानव कल्याण की बात सोचना निरर्थक थी। मनुष्य मानव कल्याण की कल्पना तभी कर सकता है, जब उसका जन्म, ज्ञान प्राप्ति, जीवन की अन्तिम यात्र, स्वच्छ वातावरण एवं शुद्ध पर्यावरण के बीच सम्पन्न हो। भगवान् बुद्ध लगभग 45 वर्षों तक पैदल विचरण कर स्वच्छ हवा में श्वास लेने के साथ–साथ बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय धम्म का संदेश देते रहे। भगवान् बुद्ध के द्वारा बताया गया पर्यावरण रक्षा का संदेश विश्व के लिए ऐसी अमूल्य धरोहर है, जिसके सहारे सम्पूर्ण विश्व का कल्याण निश्चित है। स्वच्छ वातावरण एवं शुद्ध पर्यावरण के बीच ही स्वच्छ तन, मन, ज्ञान और निर्वाण की प्राप्ति सुलभ है। यही भगवान् बुद्ध का संदेश है।

बौद्ध वाङ्मय में प्रकृति को ज्ञान–साधन के सहायक के रूप में देखा गया है। भगवान् बुद्ध का जीवन जिन अद्भूत संयोगों के सम्मिश्रण से युक्त था, उनमें यह भी एक विशेषता दिखाई देती है कि उनके जीवन में वृक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह कितने आश्चर्य की बात है, कि सिद्धार्थ के जन्म से पूर्व भी महामाया देवी

को स्वप्न में वृक्ष दिखाई दिया, जन्म भी एक वृक्ष की छत्र–छाया में हुआ, ज्ञान भी उन्होनें एक वृक्ष के नीचे ही प्राप्त किया और शरीर को भी एक वृक्ष के नीचे त्यागा। लुम्बिनी नामक शालवन में सुपुष्पित शाखाओं के नीचे जन्म, बोध गया में पीपल वृक्ष के नीचे बुद्धत्व प्राप्ति और कुशीनगर में दो शाल–वृक्षों के नीचे उन्होंने महापरिनिर्वाण को प्राप्त किया। भगवान् शाक्यमुनि बुद्ध के जीवन की यह तीनों मुख्य घटनाऐं प्रकृति की खुली गोद में, वृक्षों की छत्र–छाया में ही हुई। महलों में रहकर बुद्धत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। उनके लिए तो एकान्त व प्राकृतिक वातावरण से परिपूर्ण स्थान ही उपयुक्त रहता है। साथ ही साथ उनका उद्देश्य अपने जीवन की सुख–सुविधाओं का परित्याग कर मानव कल्याण के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग करना होता है। इसके अतिरिक्त उन्होनें बाल्यावस्था में ध्यानस्थ जम्बूवृक्ष के नीचे, वट–वृक्ष के नीचे मधुपायस तथा सम्बोधि प्राप्ति के बाद कई सप्ताह तक भिन्न–भिन्न वृक्षों के नीचे बैठकर ध्यान–सुख का अनुभव किया।

भगवान् बुद्ध रूक्खमूल के नीचे ध्यान करने का उपदेश अपने शिष्यों को भी देते थे **''यह सामने वृक्षों की छाया है..... ध्यान करो, प्रमाद मत करो'' तथा वन की शोभा ध्यानी भिक्षु से ही है,** ऐसा भाव उन्होंने मज्झिम–निकाय के महागोसिङ्ग–सुत्त[5] में प्रकट किया है। जिस–जिस वनों, वन–खण्डों, पर्वत–प्रदेशों, नदियों और पुष्करिणियों आदि के किनारे भगवान् ने समय–समय पर निवास किया, उनकी सूची बनाई जाऐ तो विदित होगा कि भगवान् बुद्ध का प्रायः सम्पूर्ण जीवन प्रकृति की छत्र–छाया में व्यतीत हुआ।

भगवान् बुद्ध का वृक्षों के साथ इतना स्नेह–संबंध था कि उन्होंने पहनने के लिए जिस चीवर को धारण किया था, उसको भी प्रकृति से चयन किया। उन्होंने चीवर को रंगने के लिए वृक्ष के छः अंगों की अनुमति दी। **''अनुजानामि, भिक्खवे, छ रजनानि– मुलरजलनं, खन्धरजनं, तचररजनं, पत्तरजनं, पुप्फरजनं, फलरजनं ति।''[6]** अर्थात् जड़ से, स्कन्ध से, छाल से, पत्ते से, पुष्प से, तथा फलों से निकला रंग से ही बनाया जाता था। उन्होंने चीवर की रूपरेखा का चयन धान के खेतों को देखकर किया।

इस प्रकार यह उनका प्रकृति के साथ अटूट संबंध को दर्शाता है। भारतीय संस्कृति में बौद्धकाल कृषि और वृक्ष विषयक ज्ञान की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। भगवान् बुद्ध ने कृषि कार्य पर अत्यधिक बल दिया, पशुओं को कृषि के लिए अनिवार्य बताया। जातकों से ज्ञात होता हे कि उस काल में कृषि कार्य उन्नत दशा में था। प्रायः वनभूमि को साफ करके खेत तैयार किए जाते थे किन्तु उपयोगी वृक्षों को आहत नहीं किया जाता था–

''सब्बं वनं छिन्दित्वा खेताणी कारित्वा कसिकम्मं करन्सु।'[7]

वनों की विद्या को इस काल में पर्याप्त रूप से जाना गया था। वनों के लिए **'वनकम्मिका'** की नियुक्ति की जाती थी। **'आरामिक**' नाम से माली उद्याानों की देखभाल करते थे और उद्यान को रमणीक बनाए रखते थे। इनको उद्यानपाल भी कहा जाता था।[8] इस प्रकार भगवान् बुद्ध के काल में वनों का पर्याप्त विकास हुआ।

बौद्ध धर्म को अपनाने वाले शासको ने भी पर्यावरण के संतुलन हेतु अनेक कार्य किये। इनमें सबसे प्रतिष्ठित शासक सम्राट अशोक थे, जिन्होने कलिंग युद्ध के पश्चात बौद्ध धर्म को अपनाया तथा अहिंसा का रास्ता अपनाया। अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाने के पश्चात जीव–हत्या पर रोक लगा दी तथा पर्यावरण को स्वच्छ तथा शान्तिमय बनाने हेतु बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये। अशोक द्वारा किये गये कार्यो का विवरण हमें उसके शिलालेखो के माध्यम से ज्ञात होता है। अशोक के प्रथम शिलालेखों में प्राणि हिंसा पर रोक लगाने हेतु कहा है कि ''पहले देवो के राजा प्रियदर्शी की पाकशाला में प्रतिदिन कई लाख प्राणी सूप के लिए मारे जाते थे। परन्तु आज जब यह धर्मलिपि लिखवायी गई है, तब से सूप के लिए तीन प्राणी मारे जो है, दो मोर और एक मृग। ये तीन प्राणी भी बाद में नही मारे जायेगें। सम्राट अशोक के दूसरे शिलालेख में दो प्रकार की चिकित्सा अर्थात मनुष्यों एवं पशुओं की चिकित्सा का प्रबन्ध किया गया है। मनुष्यों एवं पशुओं के लिए उपयोगी औषधियाँ जहाँ–जहाँ नही है, वहाँ–वहाँ लोकर लगवाई गई। मार्गो में मनुष्यों एवं पशुओं के सुख–सुविधा के लिए कुएँ खुदवाये गये और वृक्षारोपण किया गया। सम्राट अशोक

ने अपने पाँचवें स्तम्भ लेख में वन्य–प्राणियों के वध एवं वनों के काटने पर रोक लगा दी। अशोक ने बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर अंहिसा के मार्ग को अपनाने के साथ–साथ पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

सम्राट् अशोक ने वृक्षों के प्रति शासक और सर्वसामान्य के कर्त्तव्य को समझने का प्रयास किया। गिरनार के द्वितीय शिलालेख इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि इस मौर्य सम्राट् ने जनहितकारी जो निर्णय किए, उनमें पर्यावरण की रक्षा के रूप में प्राणियों को अभयदान, वृक्षारोपण और वृक्षों का संरक्षण अहम् था। अशोक ने औषधीय वृक्षों, जड़ी–बूटियों की पहचान के साथ ही उनके रोपण, संरक्षण के लिए न केवल आदेश जारी किया, बल्कि स्वयं भी इस कार्य का संपादन किया। उसने पडोसी राज्य में रहने वाने मनुष्योपयोगी और पशुपयोगी औषधि उद्यानों का भी प्रबन्ध किया जिनमें चिकित्सा के लिए औषधियाँ, जड़ी–बूटियाँ, फल आदि लगाए गए **(कता मनुस्सचिकीछा च पसुचिकीछा च)।"**[9]

उक्त अभिलेख से यह भी मालूम होता है कि सम्राट् अशोक ने सड़कों के किनारे मनुष्य व पशुओं को छाया देने के लिए बरगद के वृक्ष लगवाए, आम्रवाटिकाऐं लगवाई, यात्रियों के लिए मार्ग पर आधे कोस की दूरी पर कुएँ खुदवाए **(पंथेसू कूपा च खानापिता)।**[10]

अशोक के स्तंभों पर उत्कीर्णित प्रतीकों द्वारा भी उसके पर्यावरणीय चिन्तन को प्रकाशित करते है। सारनाथ स्तंभ के शीर्ष स्थान पर निर्मित कमल भारतीय संस्कृति का पवित्र पुष्प माना गया है। इसी स्तंभ के अन्त में उत्कीर्णित चार प्रधान प्रतीक हाथी, सिंह, वृषभ और अश्व उसके पशु–प्रेम को दर्शाता है।[11]

वर्तमान समय में पर्यावरण का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है, तभी पारिस्थितिकी संतुलन बनाये रखा जा सकता है। इसके लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए तथा जंगल एवं पेड–पौधो को काटने से रोकने की आवश्यकता है। वनों के संरक्षण हेतु राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किये जा रहे है। 1972 ई भारत ने **WWF** को स्वीकृति प्रदान कर भारत में पर्यावरण संरक्षण हेतु विविध विकास के

कार्यो का आयोजन किया है। प्रत्येक वर्ष 4 अक्टूबर को विश्व पशु–कल्याण दिवस एवं 6 अक्टूबर को विश्व वन्य प्राणी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इसलिए वृक्षों की उपयोगिता तथा महत्त्वपूर्ण भूमिका का रहस्योद्घोटन वैज्ञानिक विकास के साथ भी हुआ। आज विश्व के वनस्पति विशेषज्ञ इस बात से सहमत है कि वृक्ष सम्पदा पर समस्त मानव जाति का अस्तित्व टिका हुआ है। ये प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ प्रहरी है। अतः पृथ्वी के पर्यावरण को सुरक्षित रखने की ही आवश्यकता से प्रेरित होकर विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) जैसे महत्त्वपूर्ण दिन घोषित किये हैं।

इस प्रकार हम कह सकते है कि बौद्ध धर्म पर्यावरण को स्वच्छ एवं निर्मल बनाने में अपनी एक अद्वितीय स्थान रखता है। बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग, चार आर्यसत्य एवं वर्षावास के माध्यम से वातावरण एवं मनुष्य के बीच एक संतुलन बनाने का महत्वपूर्ण मार्ग प्रशस्त किया।

संदर्भ संकेत :

1. **विनयपिटक– पाचित्तय; पृ. 59**
2. **वही**
3. **महावग्ग– कट्ठपादुकादिपटिक्खेपो; पृ. 316,317**
4. **सुत्तनिपात– मेत्तसुत्तं; पृ. 37**
5. **मज्झिमनिकाय– महागोसिङ्सुत्त; पृ.407**
6. **महावग्ग– चीवरक्खन्धकं; पृ. 463**
7. **जातक– खण्ड 3; पृ.83**
8. **पालि जातक– एक सांस्कृतिक अध्ययन; पृ. 283,284**
9. **प्राचीन भारतीय अभिलेख; पृ.4**
10. **वही**
11. **प्राचीन भारतीय स्तूप,गुहा एवं मन्दिर; पृ.377**